● पढ़ो और समझो :

७. साक्षात्कार

– डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

जन्म : ३ मार्च १९४० **मृत्यु :** १४ नवंबर २०१३ **रचनाएँ :** डाकू का बेटा, भगतसिंह, उड़ती तश्तरियाँ, स्वानयात्रा, गिरना स्काइलैब का आदि **परिचय :** हिंदी के बालसाहित्यकार और संपादक । कविता, कहानी, नाटक, आलोचना आदि की २५० पुस्तकें प्रकाशित ।
इस पाठ में साक्षात्कार के माध्यम से अच्छी विज्ञान कथा की विशेषताओं को स्पष्ट किया गया है ।

बताओ तो सही

किसी व्यक्ति का साक्षात्कार लेने से पहले कौन-कौन-सी पूर्व तैयारी करनी पड़ेगी, बताओ ।

व्यक्ति का चयन | समय निश्चिति | मुद्दे | आवश्यक सामग्री

63UKUX

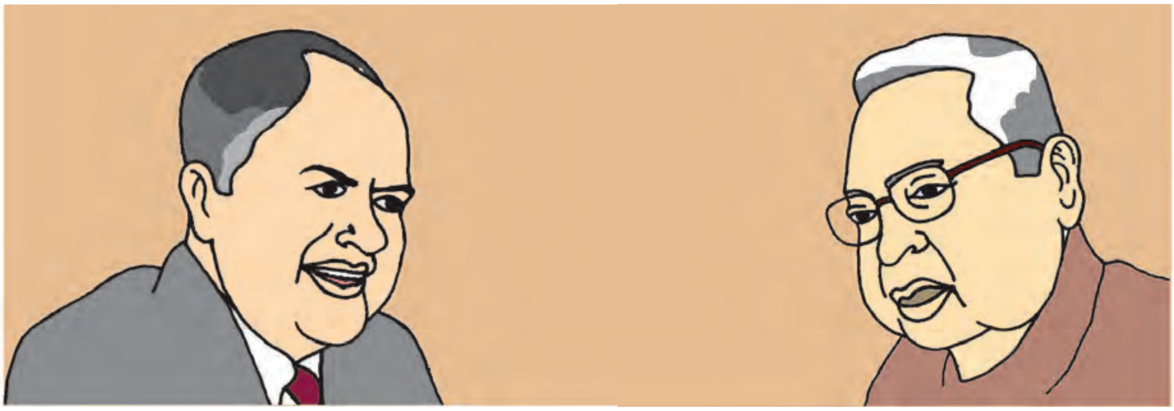

डॉ. देवसरे : डॉ. नारळीकर ! आपने बड़ी संख्या में विज्ञान कथाएँ लिखी हैं और उनमें से कई पर फिल्में भी बनी हैं तो हम अपनी चर्चा सीधे-सीधे इसी बात से शुरू करते हैं कि एक अच्छी विज्ञान कथा में कौन-कौन-सी विशेष बातें होनी चाहिए ?

डॉ. नारळीकर : मेरा मत यह है कि जिस उद्देश्य से विज्ञान कथा मैं लिखता हूँ, वह यह है कि जो पाठक हैं, उन्हें हम विज्ञान के बारे में कुछ बताएँ । कारण यह है कि आज पाठक विज्ञान को बहुत दूर की चीज समझता है, विज्ञान से डरता है, सोचता है कि ये मेरी समझ से परे है । पर उसे ऐसा लगना चाहिए कि विज्ञान हमारे जीवन का अंग बन चुका है । वह किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करता है, यह बात अगर हम उसे किसी वास्तविक कथा से बता सकें तो विज्ञान के बारे में उसे कुछ रुचि हो सकती है । इस विचार से विज्ञान के जो नियम हैं, उनको स्पष्ट करने वाले कुछ कथानक मैं चुनता हूँ, जिसका वास्तविक जीवन से संबंध हो सके । विज्ञान कथा के माध्यम से मैं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार करना चाहता हूँ । लेकिन मुझे लगता है कि हमारे देश में विज्ञान का लोकप्रियकरण एक प्रमुख बुनियादी आवश्यकता है । जब तक लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं आता, हम भविष्य के भारत की कल्पना कैसे कर सकते हैं ? इसलिए विज्ञान प्रसारकों के सामने यह बड़ी चुनौती है कि विभिन्न माध्यमों से विज्ञान का प्रचार-प्रसार कैसे किया जाए ? मैं अपनी यही भूमिका विज्ञान कथाओं के माध्यम से पूरी करने के प्रयास में लगा हूँ ।

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । कुछ विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । संपूर्ण पाठ का मौन वाचन करवाएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के प्रमुख मुद्दों पर चर्चा करें । डॉ. नारळीकर जी की विज्ञान कथाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

अध्ययन कौशल

किसी वैज्ञानिक की लघु जीवनी पढ़ो और टिप्पणी बनाओ ।

डॉ. देवसरे : विदेशों में विज्ञान कथाओं का विपुल साहित्य लिखा गया है, जैसे– उड़नतश्तरियों, दूसरे ग्रहों से आने वालों या दूसरे ग्रहों में जाने वालों को लेकर और इसी आधार पर तमाम विज्ञान सीरियल, विज्ञान फिल्में बन रही हैं । क्या ये कथाएँ हमें किसी प्रकार से वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं देतीं ?

डॉ. नारळीकर : ऐसी कुछ कथाएँ अवश्य हैं जिसमें दूसरे ग्रहों से लोग आए या हमारे यहाँ के लोग दूसरे ग्रहों पर गए हैं, जैसे 'स्टार ट्रेक' धारावाहिक में हुआ या अन्य कुछ फिल्मों में । इनमें से कुछ में ही विज्ञान अच्छी तरह से यानी तर्कसंगत रूप से देखने को मिलता है, लेकिन ऐसे कथानक अधिकांश रूप से अपवाद ही हो सकते हैं, जैसे– एच.जी. वेल्स का 'वार ऑफ दि वर्ल्डस' । सामान्य रूप से जो कुछ हम देखते हैं, वे ऐसे नहीं होते और उनसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के निर्माण की आशा करना कठिन होता है । वे मनोरंजन कर सकती हैं, पर विज्ञान में आपकी रुचि नहीं जगा सकतीं ।

डॉ. देवसरे : अब यहीं पर सवाल उठता है कि विज्ञान तो सत्य पर आधारित होता है और कथा का आधार कल्पना होती है, तो किसी विज्ञान कथा में इन दोनों की मात्रा कितनी हो और इसमें कैसा तालमेल होना चाहिए ?

डॉ. नारळीकर : इस बारे में मैं कहना चाहूँगा कि जिस दृष्टिकोण से मैं लिखता हूँ उसमें कुछ फैंटसी का अंश आ सकता है । लेकिन वह भी इस प्रकार आता है–मान लीजिए, आज हम विज्ञान का एक रूप देख रहे हैं, वह भविष्य में कैसा होगा, इसके बारे में वैज्ञानिकों को कुछ कल्पनाएँ करनी चाहिए जिसे भविष्य की योजना बनाना कहते हैं, वह होनी चाहिए यानी आगे समाज किस मार्ग से जाए, इसके बारे में कुछ विचार–मंथन आज करना चाहिए । तो आज जो विज्ञान हम देखते हैं, उसके ऊपर उसका तर्क–विस्तार (एक्सस्ट्रापोलेट) करने, यानी आगे वह कैसा होगा, इस प्रकार की कल्पनाएँ की जाती हैं ।

डॉ. देवसरे : डॉ. नारळीकर ! प्रश्न यह है कि एच.सी. वेल्स या जूल्स वर्न उन कथाओं में ऐसी कल्पनाएँ कैसे कर सके कि वे कई सालों बाद सत्य निकलीं ?

डॉ. नारळीकर : कुछ लोग वे होते हैं, जिन्हें हम युगद्रष्टा या भविष्यद्रष्टा कहते हैं । हालाँकि ऐसे गिने–चुने लोगों में आगे का समाज किस मार्ग से जाएगा, विज्ञान किस मार्ग से जाएगा, इसको परखने–देखने की शक्ति होती है । जूल्स वर्न ने चंद्रमा पर जो लोग गए, उनका जो वर्णन किया है और बाद में जब अपोलो–२ यान वहाँ गया, तब जो वर्णन वास्तव में हमने चंद्रमा का पढ़ा उसमें काफी समानताएँ दिखाई देती हैं ।

डॉ. देवसरे : एक वैज्ञानिक यदि विज्ञान कथा लिखता है, तो निश्चित रूप से वह बहुत सशक्त होगी, लेकिन कोई अन्य लेखक यदि विज्ञान कथा लिखता है या लिखना चाहता है, तो उसकी विज्ञान में गहरी पकड़ होनी अनिवार्य है, तभी संभवतः वह एक अच्छी विज्ञान कथा की कल्पना कर पाएगा ?

❑ पाठ में आए वैज्ञानिक शब्दावली ढूँढ़कर उनपर चर्चा करवाएँ । पाठ में आए एकवचन, बहुवचन, पुल्लिंग–स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान कराके सूची बनाने के लिए प्रेरित करें । इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करवाएँ । वाक्य में होने वाले परिवर्तन पर चर्चा कराएँ ।

जरा सोचो .....बताओ

अगर तुम्हें शालेय विज्ञान प्रदर्शनी का प्रमुख बनाया जाए तो... ।

डॉ. नारळीकर : देवसरे जी ! विज्ञान कथा के दो पहलू हैं । पहला यह कि विज्ञान का भाग अच्छा और सही होना चाहिए । लेकिन उसके साथ ही यदि आपका उद्‌देश्य यह है कि पाठक इसे मन लगाकर पढ़ें तो उसमें अच्छी कथा के जो साहित्यिक गुण होते हैं, वे होने चाहिए । इसलिए अच्छी विज्ञान कथा में विज्ञान और अच्छी कथा के गुणों का संगम होना चाहिए ।

डॉ. देवसरे : विश्व की विज्ञान कथाओं और उनके लेखकों में आप किसे श्रेष्ठ समझते हैं ?

डॉ. नारळीकर : विदेशी विज्ञान कथाओं में आर्थर सी. क्लार्क एक सशक्त कथाकार हैं । फ्रेड हॉयल मेरे गुरु हैं जिनसे मैंने पी एच. डी. की ट्रेनिंग ली, उनसे ही मैंने विज्ञान कथा लिखने की प्रेरणा पाई ।

डॉ. देवसरे : आपकी जो एक सशक्त विज्ञान कथा है 'अंतरिक्ष में विस्फोट', जिसको किशोरों ने बहुत पसंद किया और जिसका अनुवाद भी कई भाषाओं में हुआ है, उसमें आपने वही बात कही है जो इस चर्चा के आरंभ में आपने कही कि आप, लोगों को भविष्य की वह कल्पना देना चाहते हैं, जो संभवतः भविष्य में एक वैज्ञानिक सत्य के रूप में आ सकती है । इस कथा के बारे में आपका क्या विचार है ?

डॉ. नारळीकर : ऐसा हुआ था कि पहले मैंने इसे एक छोटी-सी कथा के रूप में मराठी में लिखा था । फिर मुझे लगा कि इसे किशोरों के लिए छोटे उपन्यास के रूप में बढ़ाया जा सकता है । इसी बीच दिल्ली से साहित्य अकादमी का पत्र आया कि आप हमारे लिए किशोर पाठकों के लिए कोई विज्ञान उपन्यास लिखें । तो मैंने यह उपन्यास लिखा । इसमें मैंने यह दिखाना चाहा है कि तारे में भी विस्फोट होता है । यह विस्फोट तारे की आयु में बहुत छोटा-सा क्षण माना जाता है, क्योंकि सूर्य जैसा तारा यदि दस से बारह अरब वर्ष जिएगा, तो उसके हिसाब से दो-तीन हजार वर्ष मानव के जीवनकाल में बहुत बड़ी अवधि होती है । इसीलिए मैंने सम्राट हर्षवर्धन के समय से तीन हजार वर्ष का कालखंड उसमें दिखाया है कि विस्फोट का प्रभाव कितना हो सकता है । हम लोग ऐसा समझते हैं कि हम इस पृथ्वी के स्वामी हैं, इसको कंट्रोल कर सकते हैं, जो कि गलत है । अंतरिक्ष के जिस वातावरण में हम रहते हैं उसमें यदि कोई खतरनाक चीज आ जाए तो हम लोग उसका मुकाबला नहीं कर पाएँगे ।

डॉ. देवसरे : आज भी पत्रिकाएँ और लोग मानते हैं कि बच्चों को परीकथाएँ, भूत-प्रेतों, चुड़ैलों आदि की कहानियाँ पढ़नी चाहिए तो विज्ञान कथाओं के संदर्भ में इनके बारे में आपका क्या विचार है ?

डॉ. नारळीकर : मैं यही कहूँगा कि जो बच्चे परीकथाएँ, भूत-प्रेतों की कहानियाँ आदि पढ़ते हैं, उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण जागृत होने में बाधा पड़ सकती है क्योंकि वे अंधविश्वासी अधिक बन सकते हैं । हमारे देश में अंधविश्वास ने अपनी जड़े कितनी गहरी जमा रखी है, यह वे लोग अधिक अच्छी तरह जानते हैं जो विज्ञान प्रसारक हैं । इसलिए मैं ऐसे बच्चों को सलाह दूँगा कि वे विज्ञान कथाएँ अवश्य पढ़ें । हम जब विज्ञान की नजर से कुछ पढ़ते हैं तो समझ में आ जाता है कि संभव क्या है, असंभव क्या है ? विज्ञान कथाएँ नई दृष्टि, सोच और भविष्य की सार्थक कल्पना देती हैं ।

❑ किसी महान विभूति का साक्षात्कार पढ़ने के लिए प्रेरित करें । साक्षात्कार के महत्त्व एवं इसकी विशेषता पर चर्चा करें । उनसे परिसर में रहने वाले किसी सैनिक, सामाजिक कार्यकर्ता के साक्षात्कार के लिए प्रश्न निर्मिति करवाकर साक्षात्कार लेने के लिए कहें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
चुनौती = आह्‌वान
फैंटसी = कल्पना
पहलू = पक्ष, अंग
मुहावरा
समझ से परे होना = समझ में न आना

विचार मंथन

।। बिना परिश्रम न मिले मंजिल ।।

वाचन जगत से

डॉ. नारळीकर जी की कोई विज्ञानकथा पढ़ो और अपने मित्रों को बताओ ।

सुनो तो जरा

दूरदर्शन से प्रसारित होने वाला कोई साक्षात्कार सुनो और उसका महत्त्वपूर्ण अंश सुनाओ :

- साक्षात्कार लेने वाले का नाम
- साक्षात्कार देने वाले का नाम
- विषय
- महत्त्वपूर्ण बातें

मेरी कलम से

किन्हीं दस वैज्ञानिकों और उनके आविष्कारों के नामों की तालिका बनाओ ।

खोजबीन

अंतरजाल की सहायता से राज्यों के स्थापना दिवस ज्ञात करो और सूची बनाओ :
जैसे– महाराष्ट्र = १ मई, १९६० ई.

- राज्य
- दिनांक
- वर्ष

स्वयं अध्ययन

प्राचीन काल तथा वर्तमान में प्रयुक्त वजन–मापों के नामों की तालिका बनाओ ।

✲ उचित पर्याय को गोल बनाओ :

(क) हमारे देश की बुनियादी आवश्यकता है ।

१. विज्ञान का लोकप्रियकरण   २. विज्ञान का प्रयोग   ३. वैज्ञानिक लेखन

(ख) डॉ. नारळीकर जी के गुरु; जिनसे उन्होंने पीएच. डी. की ट्रेनिंग ली ।

१. आर्थर सी. कार्ल्क   २. ज्यूल्स वर्न   ३. फ्रेड हॉयल

(ग) किशोरवयीन बच्चों द्‍वारा पसंद की हुई विज्ञान कथा ।

१. ब्लैक क्लाउड   २. अंतरिक्ष में विस्फोट   ३. उड़ती तश्तरियाँ

सदैव ध्यान में रखो

वाणी से संस्कार छलकते हैं ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित में से तत्सम, तद्‍भव, देशी, विदेशी और संकर शब्द शब्दकोश की सहायता से छाँटकर लिखो :

पलंग, पेट, साग, खेत, मशीन, लॉटरी, पानी, घृत, तोप, छतरी, कार्य, लड़का, सायं, घी, गड़बड़, हस्त, आग, स्नान, इंजन,मिनट, शर्करा, प्रक्षालन, यूनिवर्सिटी, पवित्र, खिड़की, झाड़ू, ग्राम, रेडियो, कॉलेज, पाठशाला, पूँजीपति, घड़ीसाज, पगड़ी, रात, अंत, साइकिल, दीपक, गरीब, पार्टीबाजी, अखबार, ऊँट, स्टेशन, मूस, रेलगाड़ी ।

शब्दसंपदा

तत्सम	तद्‍भव	देशज	विदेशी	संकर
---------	---------	---------	---------	---------
---------	---------	---------	---------	---------
---------	---------	---------	---------	---------
---------	---------	---------	---------	---------
---------	---------	---------	---------	---------
---------	---------	---------	---------	---------
---------	---------	---------	---------	---------